अजायब बानी

मासिक पत्रिका

नवम्बर-2025

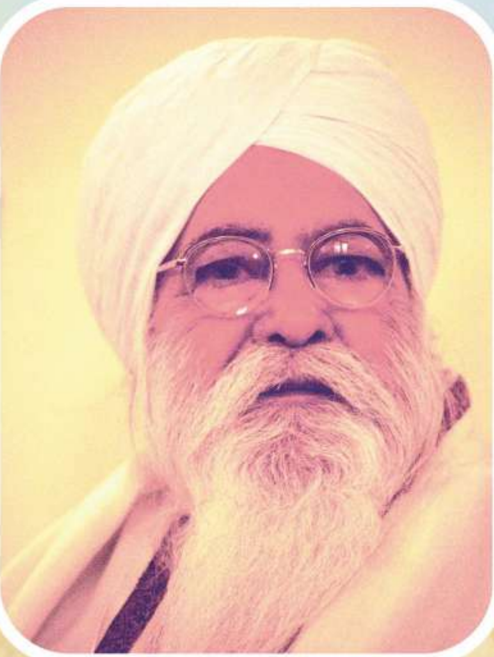

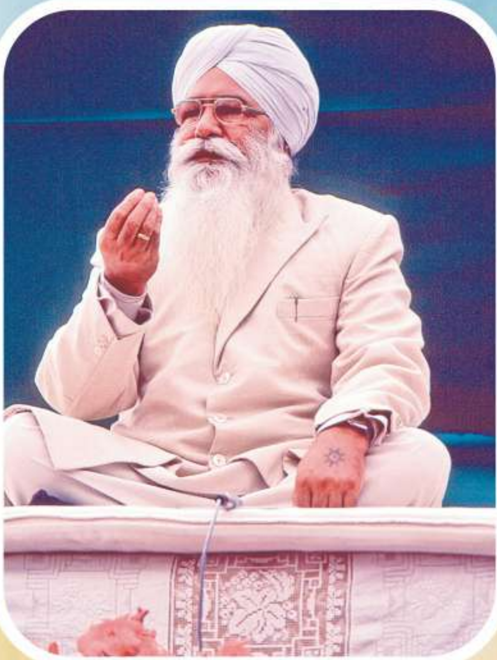

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–तेइसवां	अंक–सातवाँ	नवम्बर–2025

महत्त्वपूर्ण संदेश — 3
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

पूरे गुरु — 9
सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सच्चे सेवक — 21
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

धन्य अजायब — 32
सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 **व** 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**
e-mail : dhanajaibs@gmail.com 284 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

महत्त्वपूर्ण संदेश

दिल्ली

हमें पता ही है कि हम यहाँ क्यों इकट्ठे हुए हैं? हमने सोचना है। इस समय अमृतवेला है, पक्षी भी जागते हैं, वे भी अपने पैदा करने वाले के शुक्रगुजार होते हैं। फरीद साहब कहते हैंः

हौं बलिहारी पखिंयां जंगल जिन्हां वास।
कंकर चुगन थल वसन रब न छोडन पास।।

हम उन पक्षियों पर बलिहार जाते हैं, जो इंसानों से भी पहले उठकर परमात्मा का शुक्र करते हैं। गुरु नानक साहब भी कहते हैंः

चिड़ि चुकी पह फुटी वगण बहो तरंग।
अचरज रूप संतन रचे नानक नामे रंग।।

सुबह पक्षी अपनी जुबान में उस मालिक के शुक्रगुजार होते हैं। इस किस्म की महान आत्माएं भी इस संसार मंडल में आती हैं, वे उस समय सोए नहीं रहते बल्कि नाम के साथ जुड़ जाते हैं। हमारे ऊपर परमात्मा ने बड़ी भारी दया की है, उसने हमें अपना भेद दिया और नाम के साथ जोड़ा।

अब हमारा फर्ज बनता है कि हम उस 'शब्द–नाम' के साथ जुड़े रहें। हम तभी नाम के साथ जुड़े रह सकते हैं, अपनी जिंदगी में कामयाब हो सकते हैं जब हम यह न कहें कि सतगुरु हमें ले जाएंगे। यह तो ठीक है कि वे ले ही जाएंगे। अगर बेटा अपनी जिंदगी में यही कहे कि मैं पिता की कमाई खाऊंगा। यह ठीक है पिता तो खिलाएगा क्योंकि यह पिता की जिम्मेदारी है लेकिन देखने वाले यही कहेंगे कि यह लड़का नालायक है, अपने पिता के ऊपर बोझ बना हुआ है।

हमें सतगुरु के ऊपर बोझ नहीं बनना चाहिए खुद भी हिम्मत करनी चाहिए, पुरुषार्थ करना इंसान का धर्म है। सबसे पहले हमनें अपने शरीर

को पवित्र रखना है, शरीर को विषय–विकारों में नहीं लगाए रखना। विषय–विकार कीचड़ हैं, कीचड़ लगने से शरीर मैला हो जाता है। हमारा शरीर पवित्र होगा तो मन जरूर पवित्र होगा क्योंकि शरीर का मन के साथ संबंध है। हमारा मन जितना पवित्र होगा उतनी ही आत्मा पवित्र होगी। सचखंड से आ रहा शब्द पवित्र है, ऐसी कोई ताकत नहीं जो आत्मा को शब्द से अलग रख सके, शब्द ने अपने आप ही उसमें मिल जाना है।

जिस तरह लोहे को जंग लगी हुई है, चाहे आप चुम्बक को उसके ऊपर भी रख दें वह उस लोहे को अपनी तरफ नहीं खींचेगा अगर लोहे को जंग नहीं लगी हुई तो लोहा जब भी चुम्बक के दायरे में आएगा चुम्बक फौरन उसे अपनी तरफ खींच लेगा। जब हम शब्द सुनते हैं तो वह अंदर नहीं खींचता क्योंकि आत्मा के ऊपर मैल चढ़ी हुई है। सिमरन आत्मा की सफाई के लिए झाड़ू का काम करता है। हमें सोते–जागते, उठते–बैठते, चलते–फिरते सिमरन नहीं छोड़ना चाहिए, हमें किसी से बात करते हुए भी सिमरन नहीं छोड़ना चाहिए।

मुख की बात सगल स्यों करदा, जीव संग प्रभ अपने धरदा।

प्रेमी लोग दुनिया के साथ बातचीत भी करते हैं, व्यवहार करते हुए भी उनके दिल की तार सिमरन के साथ लगी हुई है। सिमरन की तार हमें सतगुरु के साथ जोड़े रखती है, प्रेमी की जुबान सदा तर रहनी चाहिए। अभ्यास न छोड़ें, एक दिन अभ्यास में नागा हो जाने पर आप यह समझें कि हम भजन से बहुत दूर हो गए हैं। दिन तो बहुत ज्यादा है, जिन महात्माओं ने परमात्मा को प्रकट किया है वे कहते हैंः

इक छिन बिसरे स्वामी जाणों बरस पचासा।

एक सेकंड परमात्मा या अपने प्यारे सतगुरु को भूल जाना पचास वर्षों जितना फर्क पड़ जाता है। सोचें, जो लोग कई–कई दिन भजन नहीं करते या कई–कई घंटे सिमरन भूले रहते हैं उनकी क्या हालत हो सकती है।

इक तिल प्यारा विसरे ते भगत कनेही होय।

एक तिल जितना भी बिसर जाने से भक्ति में बहुत बड़ी दरार पड़ जाती है। हमने हमेशा उनकी याद बनाकर रखनी है, उनकी याद ही हमें तारेगी। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आपसे भजन नहीं होता तो कम से कम सन्तों के साथ प्यार बना लें।'' सन्त प्यार की मूरत होते हैं आखिरी वक्त जिस तरफ हमारा झुकाव होगा हमने वहीं जाना है अगर सन्तों के साथ प्यार है तो हमने सन्तों में ही समाना है, सन्तों ने मालिक के पास लेकर जाना है।

आप दुनिया को थोड़ा सा भी याद करके देखें, रात को आपको बड़ी आसानी से दुनिया के सपने आने शुरु हो जाते हैं। आपको गुरु का सपना क्यों कम आता है? दुनिया को थोड़ा सा याद करो तो सपने में दुनिया दिखाई देनी शुरु हो जाएगी। दुनिया का ख्याल बहुत जल्दी पक जाता है गुरु का ख्याल जल्दी क्यों नहीं पकता क्योंकि गुरु पवित्र हैं। वह हमारे मैले हृदय में नहीं आते क्योंकि हम मन-इन्द्रियों के घाट पर हैं लेकिन कभी-कभी हमारा मन शान्त होता है थोड़ी बहुत पवित्रता होती है हम बैठते हैं गुरु अपनी दया से हम सोते हुओं की सुरत को ऊपर खींच लेते हैं। उस समय हमें गुरु का स्वपन आता है। जब गुरु का स्वपन आता है तो सारा दिन प्रेमी का दिल गुलाब के फूल की तरह खिला रहता है लेकिन हम पवित्र न होने की वजह से उनकी दया को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर सकते।

वह जो कुछ कहना चाहते हैं कई बार कह भी देते हैं लेकिन आप भूल जाते हैं या उनकी आवाज को पूरी तरह सुन नहीं रहे होते। आपका झुकाव नीचे की तरफ होता है। प्रेमी को सिमरन करके अपने ध्यान को तीसरे तिल की तरफ लगाए रखना चाहिए। अगर आप एक बार थोड़ा सा भी तीसरे तिल पर इकट्ठे होने लग जाएंगे तो आपके अंदर बहुत भारी प्यार जाग जाएगा। ऐसी प्रीत लग जाएगी तो आप उस प्यार या लगन को छोड़

नहीं सकेंगे। जैसे आज प्यार लगाना मुश्किल है इसी तरह फिर उस प्यार को तोड़ना भी मुश्किल है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

तोड़ी न टूटे छोड़ी न छूटे, ऐसी माधो खिच तनी।

आप देख लें, इसी दिल्ली में प्रेमियों पर बड़े–बड़े कष्ट आए, भाई मतिदास के आगे आरा लाकर रख दिया और कहा कि तू जिसकी खातिर जान देता है यह पास में ही पिंजरे में बैठा है, वह अपनी रक्षा नहीं कर सकता तेरी रक्षा कैसे करेगा। उस समय मुसलमानों का बहुत जोर था, उन्होंने कहा कि हम तुझे अच्छा ओहदा दे देते हैं, धन–दौलत दे देते हैं, तू इसका साथ छोड़कर हमारे मजहब को कुबूल कर।

अगर मतिदास बाहरमुखी होते तो भरोसा टूट जाता लेकिन वे अंदर जाकर देखते थे कि मेरे गुरु कुलमालिक हैं। भाई मतिदास ने कहा कि आप मुझसे ऐसी बातें न कहें अगर आप मुझ पर तरस करते हैं तो मेरा मुँह मेरे प्रीतम की तरफ कर दें और मुझे जल्दी आरे से चीर दें। जल्लाद भी भाई मतिदास के सिदक को देखकर काँप उठे लेकिन हुक्म तो उन्हें भी बजाना पड़ता है।

जिस तरह दीपक की बत्ती जैसे–जैसे अपना सिर कटवाती है वह ज्यादा रोशनी करती है। इसी तरह जब प्रेमी सिख को एक बार प्रेम लग जाता है वह अंदर जाने लग जाता है तो चाहे जो भी घटना घटे उसका अपने गुरु के साथ प्रेम नहीं घटता। वह सोचता है कि यह मेरा कर्म है। हमनें अभ्यास नहीं छोड़ना दिल लगाकर अभ्यास करना है। अभ्यास पहले दुनिया के काम बाद में। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

हथ कार वन्नी दिल यार वन्नी।

हमारी इस तरह की हालत हो जानी चाहिए, हमनें काम हाथ–पैरों से करना है अंदर नाम की तार बजे। दिल की तार हमेशा ही सिमरन से जुड़ी

रहे। सिमरन जरूरी है भजन–अभ्यास जरूरी है। मैंने सबसे पहले आपको शरीर की पवित्रता और मन की पवित्रता के बारे में बताया था अगर मन पवित्र है तभी हम सिमरन कर सकते हैं। हम मन को गंदा करके बैठे हैं, हम अभ्यास नहीं करते। सतगुरु जो दया करते हैं वह तो सफाई पर ही लग जाती है। वे फिर थोड़ी बहुत दया करते हैं तो हम फिर मैल लगा लेते हैं।

जब हम विषय–विकारों में लिप्त होते हैं तो काल गुरु से कहता है कि आपने इसे नाम दिया है, इसकी करतूत देखें। आपके अंदर सतगुरु बैठे हैं वे अंतर्यामी होते हैं, आपको काल भी देख रहा है। दुनिया काल की है अगर वह न देख रहा हो तो लेखा–जोखा कौन दे। हम जो कर रहे हैं वह जरूर देख रहा है, वह लिखता है। सब कुछ लेखे में है लेकिन गुरु के अंदर विश्वास होता है। गुरु सब्र वाले होते हैं, वे कहते हैं कि कोई बात नहीं यह जरूर सुधर जाएगा। अगर हम सिमरन करते रहते हैं तो सतगुरु अपनी पूरी दया करते रहते हैं और एक दिन हम कामयाब हो जाते हैं। आज का काम कल पर नहीं छोड़ना। कबीर साहब कहते हैंः

कल करन्ता अब कर अब करता सोई ताल,पाछे कछु न होवी जो सिर पर आया काल।।

हमें आज कल करते हुए समय नहीं बिता देना चाहिए कि भजन कल करेंगे या परसों करेंगे। जिस मन ने आज आपको यह सलाह दी है कि रात बड़ी है कल अभ्यास कर लेंगे, वही मन कल के अभ्यास को परसों पर डाल देगा। वह मन अंदर ही है इसलिए उसकी राय न मानें।

हम सबने मन लगाकर भजन–सिमरन करना है। भजन–सिमरन ही ऐसी ताकत है जो हमारे साथ जाएगी तो क्यों न वह धन इकट्ठा करें जो हमारे साथ जाएगा। दुनिया के काम भी करने हैं, ऐसा नहीं कि हमने इन्हें छोड़ देना है। दुनिया के काम भी वही आदमी अच्छे ढंग से कर सकता है जो नाम–शब्द की कमाई करता है, वह अपनी ड्यूटी समझेगा।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

पूरे गुरु

DVD-542(4)

26 मई 1988 हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी अमेरिका

हाँ भई, मैं अपने गुरूदेव दयालु कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने कठिन मेहनत करके, लम्बे सफर करके आत्मा के अंदर प्यार का बीज बोया। आज वे सोई हुई आत्माएं परमात्मा के प्यार में जाग उठी हैं, मुझे इस टूर पर कई जगह जाने का मौका मिला है। हजारों की तादाद में संगत जो उनके प्यार को पहले भूले हुए थे, आज महसूस कर रहे हैं कि किस तरह वे इंसान की शक्ल में अपना प्यार दोनों हाथों से बाँटने के लिए आए, परमात्मा कृपाल का चोला धारण करके इस दुनिया में आए।

हम कितने भोले थे जो हमने उनसे फायदा नहीं उठाया, उन्हें इंसान समझा। सन्त–महात्मा समाज बनाने के लिए नहीं आते क्योंकि लोगों ने पहले ही समाज को बहुत बाँटा हुआ है। वे टूटी हुई आत्माओं को परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए आते हैं। वे बहुत प्यार से कहते हैं कि आप अपने–अपने समाज में रहते हुए, घर–गृहस्थी की जिम्मेदारियां निभाते हुए बड़ी आसानी से परमात्मा से मिल सकते हैं। इसके लिए **पूरे गुरु** की जरूरत है जो अपने जीवनकाल में पूर्ण हो गए हों।

आपको पता ही है कि एम.ए. पास करने के लिए सोलह साल लगते हैं। किसी महात्मा के चरणों में जाने से पहले उनकी जिंदगी को पढ़ें कि इन्होंने जिंदगी में कोई भजन–अभ्यास किया है।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल सदा लाहौर में पैदा हुए गूँगे पहलवान की मिसाल दिया करते थे कि वह दुनिया में इसलिए मशहूर हुआ कि वह रातों को जागता था, कसरत करता था। इसी तरह परमात्मा को पाने के लिए बहुत मेहनत, मशक्कत और कुर्बानी की जरूरत होती है। अपना

आप न्यौछावर करके भी अगर परमात्मा मिल जाए तो सस्ता है। वे लोग कितने भोले-भाले हैं जो सोते हुए उठकर कह देते हैं कि हम महात्मा हैं या वे लोग कितने भोले हैं जो ऐसे लोगों के पीछे लगकर अपनी आत्मा का घात कर रहे हैं।

कल रात को मोहनी ने मुझसे पूछा कि आपको कृपाल कैसे मिले? मैं थका हुआ था क्योंकि मैं काफी लम्बा सफर तय करके आया था इसलिए मैं कुछ खास नहीं बोल सका। एक बार पहले भी किसी ने पूछा तो मैंने उसे बताया था कि मैंने जवानी की होली खेली है, मैंने जवानी से कोई दुनियादारी का काम नहीं लिया। मैं जैसा माँ के पेट से निकला वैसा ही चल-फिर रहा हूँ इसलिए मैं कहता हूँ कि जैसी लिव पहले लगती है अगर वैसी निभ जाए तो अपनी देह की क्या गत है, वह करोड़ों पुरुषों को भी तार जाता है। सच्ची लिव माँ के पेट में ही लगती है, वहाँ यह जीव उल्टा लटका होता है और साँस-साँस के साथ फरियाद करता है।

मैंने बताया कि मैंने जायदाद की होली खेली है। मुझे मेरे गुरु ने जो कहा, मैं वह एक सेंकड में छोड़कर अलग हो गया। मैं लोगों की तरह जायदाद के लिए नहीं लड़ा। मैंने कोई पार्टी नहीं बनाई न ही सन्त पार्टी बनाने के लिए आते हैं कि मैं महात्मा हूँ आप मेरा प्रचार करें। सच्चाई यह है कि आप रसल पर्किन्स से पूछ सकते हैं कि जब यह मेरे पास आया था तो उस समय मैं जितना सादा था आज भी उतना ही सादा हूँ।

मैंने दरवाजा बंद करके बाहर से ताला लगवाया हुआ था कि मैं बाहर दुनिया में क्या मुँह दिखाऊं? मैं उस दयालु कृपाल की पत्नी था, सच्चा पति ही अपनी पत्नी को ढूंढ सकता है। मैंने उन्हें नहीं ढूंढा था क्योंकि अंधे की ताकत नहीं कि सुजाखे को ढूंढ ले। सुजाखे को पता था कि मेरी पत्नी मेरी याद में बैठी है, मैं जाकर उसका सुहाग पूर्ण करूं, ये उनकी दया थी।

वे आकर मुझसे मिले और उन्होंने मेरी सोई हुई आत्मा को प्यार का बीज लगाकर जगा दिया। बेशक सूली पर चढ़ना बहुत मुश्किल है लेकिन सन्त बताते हैं कि उस पर चढ़ना भी आसान है। मिनट, सेंकड और घंटो की थोड़ी बहुत तकलीफ होती है जो झेली जाती है लेकिन प्यार की सूली पर चढ़ना इससे कहीं अधिक मुश्किल होता है। जिस तरह एक दीवार के ऊपर तस्वीर उकरी हुई है वह तस्वीर बोलती नहीं सिर्फ दिल को खींचती है। देखने वाला उस तस्वीर के पास खड़ा हो जाता है। इस तरह का बनना पड़ता है। उस तस्वीर की तरह दिल गुरु के हाथ में देकर चुप होना पड़ता है क्योंकि प्रेमी बोल भी नहीं सकता, चुप भी नहीं रह सकता। उसके अंदर दुनियावी खून खत्म हो जाता है। उसके अंदर प्यार का खून दौरा करता है।

गुरु नानकदेव जी ने कहा था, ''अगर मैं चुप रहता हूँ तो लोग कहते हैं कि इसे बोलना नहीं आता अगर बोलता हूँ तो कहते हैं कि बकवास करता रहता है। अगर मैं बाहर जाता हूँ तो लोग कहते हैं कि मिट्टी उड़ाता रहता है।'' प्रेमी अपने गुरु के प्यार की दुनिया में दाखिल होकर सिर्फ आँहे ही भरता है। इशारों से लोगों को कहता है, ''प्यारेयो, संसार में आकर प्यार का सच्चा सौदा खरीदना है, प्यार रूप को समझना ही मुश्किल है।''

कृष्ण ने ऊधो से कहा कि जो मेरे प्यारे भक्त हैं, जो मुझसे सच्चा प्यार करना चाहते हैं मैं उन्हें तीन चीजें देता हूँ। मैं उन्हें बीमारी देता हूँ, बेरोजगारी देता हूँ और उनकी निरादरी करवा देता हूँ।

महाराज सावन सिंह जी अपने सतसंगियों से कहा करते थे कि देखो प्यारेयो, आप बहुत दुखी होते हैं कि हम बीमार हैं, बेरोजगार हैं लेकिन इससे आपकी आत्मा की सफाई होती है। आपके बुरे कर्मों का प्रभाव खत्म होता है अगर आपका एक दिन परेशानी में गुजर जाता है तो आप समझें कि आपकी एक दिन की सजा और कम हो गई है फिर वे कहते कि जवानी का मान, पढ़ाई का मान, धन का मान यह प्यार में रूकावट बनते

हैं। क्राईस्ट ने कहा था कि किसी धनी का मालिक के दरबार में पहुँचना मुश्किल है लेकिन हाथी का सूई की नोंक में से निकल जाना आसान होता है। कर्मों का कर्ज गुरुमुख भी भोगते हैं और मनमुख भी भोगते हैं। मनमुख चीखते–चिल्लाते हैं लेकिन गुरुमुख मालिक का भाणा मानकर भोग लेते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

देह धरी का दंड सब काहू को होय।
ज्ञानी भोगे ज्ञान से अज्ञानी भोगे रोय।।

सन्तों का मिशन प्यार का मिशन होता है, सन्त सोई हुई आत्माओं को जगाने के लिए आते हैं। हम कहते हैं कि हम जाग रहे हैं लेकिन सन्त कहते हैं कि आप जाग नहीं रहे सो रहे हैं। हम दुनिया की तरफ से जाग रहे हैं, समझदार हैं, चतुर हैं लेकिन हम परमात्मा की तरफ से बिल्कुल बेखबर हैं। आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है।

आज से चालीस–पचास साल पहले हिन्दुस्तान के बहुत सारे लोग जलधारे करते थे, सिर की चोटी पर बहुत बारीक पानी की धार डालकर बैठ जाते। आमतौर पर दिसम्बर–जनवरी के महीने ठंडे होते हैं, ठंडे पानी की बारीक धार सिर में डलवाना बहुत मुश्किल होता है।

मई और जून के महीने बहुत गर्म होते हैं। सूरज की गर्मी में तपती धूनी के पास पाँच–छह घंटे बैठना बहुत मुश्किल होता है। आजकल तो लोगों के ख्याल कुछ और हैं लेकिन उस वक्त आम लोग भक्तिभाव की तरफ बहुत ज्यादा लगे हुए थे क्योंकि आज पश्चिम का प्रभाव पड़ रहा है।

प्यारेयो, मैंने ये सब कर्मकांड बहुत ठंडे दिल से और प्यार से किए हैं लेकिन इन्हें करने से अहंकार के सिवाय कोई फायदा नहीं हुआ। अगर कुछ प्राप्त होता है तो वह नाम की भक्ति करने से ही प्राप्त होता है। स्वामी जी महाराज ने भी अपनी जिंदगी में ऐसे कई साधन किए हैं जो वे हमें बता रहे हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज भी अपनी हिस्ट्री में ऐसा बयान करते हैं। महात्मा की जिंदगी कोई साधारण जिंदगी नहीं होती, उन्हें पिछले जन्मों का बहुत ज्ञान होता है। प्यारेयो, वे संसार में आकर दुनियावी लेवल पर जिंदगी भोगते हैं, वे भोले भाले होते हैं हम उन्हें क्या समझ सकते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि मैंने बहुत पाठ किए, वेद विचारे, योगियों वाले सारे कर्म किए लेकिन काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार घटा नहीं बल्कि और बढ़ गया। मैं थक कर चूर होकर गुरु रामदास जी महाराज के चरणों में आकर गिर पड़ा। गुरु ने मुझे विवेक बुद्धि दी जो सही फैसला कर पाई कि नाम की कमाई ही सही है। इसलिए मैंने गुरु का कहना माना, नाम की कमाई करके शान्ति प्राप्त की।

सोता मन कस जागे भाई। सो उपाव मैं करूँ बखान।।
तीर्थ करे बर्त भी राखे। विद्या पढ़ के हुए सुजान।।

सन्त–महात्मा हमें सुनी–सुनाई बातें या किताबों में से पढ़कर नहीं सुनाते, उनका जाती तजुर्बा होता है। आमतौर पर हम समाजों में लम्बी प्रार्थनाएं, कर्मकांड या रीति–रिवाज करके मन को जगाना चाहते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैं तीर्थों पर गया, व्रत भी रखे और भी सारे साधन किए। मैं इस शब्द में आपको बताऊँगा कि सोते हुए मन को किस तरह जगाना है।''

जप तप संजम बहु विधि धारे। मौनी हुए निधान।।
अस उपाव हम बहुतक कीन्हे। तो भी यह मन जगा न आन।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि विद्या भी पढ़ी, चतुर और स्याने भी बनें जप–तप भी किया, मौनी बनकर भी रहे। मौनी वे साधु होते हैं जो जुबान से नहीं माँगते लिखकर माँग लेते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''जब आपका हृदय दुनिया की शक्लों और पदार्थों के लिए

कल्पना कर रहा है जुबान से नहीं बोलेंगे तो क्या है?'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पशु कब बोलते हैं, वे मुक्त हो जाने चाहिए थे?'' स्वामी जी महाराज कहते हैं कि इसी तरह हमने दुनिया के सब रीति-रिवाज किए लेकिन मन अहंकार में सो गया, यह मालिक की तरफ फिर भी नहीं जागा।

आमतौर पर संसार रीति-रिवाज की इसी चक्की को चला रहा है लेकिन मन फिर भी नहीं जागता। गुरु की प्यार भरी नजर आत्मा को भी जगा देती है। मैं बताया करता हूँ कि बाबा बिशनदास जी के चरणों में जाना कितना मुश्किल था क्योंकि वे प्यार नहीं करते थे ज्यादा से ज्यादा सख्त थे। सेवा देकर धन्यवाद करवा लेना बहुत आसान है लेकिन सेवा देकर थप्पड़ खाने बहुत मुश्किल होते हैं। मैं जब उनके आगे ज्यादा सेवा रखता तो वे ज्यादा थप्पड़ लगाते थे।

बाबा बिशनदास जी ने मुझे कभी अपने आश्रम से चाय भी नहीं पिलाई थी अगर वे इतने सख्त न होते तो हो सकता है कि मुझमें बहुत नुख्स पड़ जाते। हुजूर कृपाल के चरणों में आकर मुझे प्यार के सिवाय कुछ नहीं मिला। वे प्यार रूप थे, प्यार के समुंद्र थे। मैंने अपनी जिंदगी में प्यार की बहुत तलाश की, मैं प्यासा था और मुझे उनसे प्यार मिला।

एक बार की बात है, हम सोए हुए थे उस दयालु ने मुझे साथ ही सुलाया। वे दुनियावी तौर से जाग रहे थे कहने लगे, ''क्यों भई, जाग रहे हो?'' मैंने कहा, ''दुनियावी तौर पर तो जाग रहा हूँ लेकिन पता नहीं कितने जन्मों से सो रहा हूँ।'' उन्होंने प्यार भरी नजर डाली और आत्मा को भी जगा दिया। आप देख सकते हैं कि जिस शख्स ने सारी जिंदगी तन-मन से रीति-रिवाज किए हों, सख्त तप किए हों लेकिन उस आदमी का मन और आत्मा न जागे हों। गुरु ने प्यार भरी नजर से उस आत्मा को जगा दिया। महान गुरु और उनके प्यार को समझना कितना मुश्किल होता है।

खोजत खोजत सतगुरु पाये। उन यह जुक्ति कही परमान।
सतसंग करो संत को सेवो। तन मन करो कुरबान।।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जहाँ चाह है वहाँ राह बन जाती है। भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है जरूर मिल जाता है।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जब हमने खोज की कि कौन मेरी आत्मा को जगा सकता है तो खोजते-खोजते परमात्मा ने मेहर करके पूरे गुरु से मिलाप करवाया। जब गुरु मिले तो उन्होंने बताया कि आप सतसंग करें, आपको आपकी गलतियों का और कमियों का पता लगेगा। आप जब गलतियां छोड़ेंगे तो आपकी आत्मा जाग जाएगी।

जब **पूरे गुरु** मिल जाते हैं तब आप अपना तन मन उन पर कुर्बान कर दें अगर हमने अपना तन गुरु के ऊपर कुर्बान किया होगा तो हम इस तन को विषय-विकारों और खोटे कर्मों में लगा ही नहीं सकते क्योंकि हमें यह अमानत मिली है, हमने इसे गुरु पर कुर्बान किया है। यह तन गुरु का हो चुका है अगर मन को गुरु का समझेंगे, मन को गुरु पर कुर्बान कर देंगे तो गुरु का दिया हुआ सिमरन करेंगे, गुरु के ही ख्याल उठेंगे वही हमारे अंदर बैठेंगे और हम उन्हीं को देखेंगे। अभी हम दुनिया के संकल्प-विकल्प उठा रहे हैं। सारा दिन दुनिया को सोच रहे हैं, इसके अंदर दुनिया ही भर रहे हैं।

हमारे सतगुरु ने हमें डायरी रखने के लिए कहा, डायरी का मतलब यही है कि हम रोज-रोज अपने जीवन की पड़ताल करें। डायरी का मतलब यह नहीं कि आज जो गलती हुई शाम को फिर उसे लिख देना है, अगले दिन लिख देना है। आमतौर पर डायरी में यही होता है। नहीं प्यारेयो, डायरी की महानता को समझें जो गलती आज हुई है, वह गलती दोबारा न हो। जिंदगी की एक गलती ही जिंदगी को बर्बाद कर देती है।

सतगुरु शब्द सुनो गगना चढ़। चेत लगाओ अपना ध्यान।।
जागत जागत अब मन जागा। झूठा लगा जहान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि इस तरह आपका मन परमात्मा की तरफ जाग जाता है फिर यह संसार सपने की तरह नजर आता है। सिमरन फैले ख्याल को तीसरे तिल पर इकट्ठा करने का रास्ता या जरिया है और शब्द मंजिल है। आप कहते हैं कि जब आप सिमरन के जरिए फैले ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र कर लेंगे तो दरवाजा खुल जाएगा, यही हमारे घर का रास्ता है। आपको आपके गुरु वहाँ मौजूद मिलेंगे, वे कहेंगे कि पकड़ 'शब्द' और चल ऊपर। **पूरे गुरु** वह नहीं होते कि दो शब्द बताकर पल्ला छुड़वा लिया, नाम देना जिम्मेदारी होती है। जब तक उस जीव को परमात्मा के आगे खड़ा करके बक्शवा न दे कि ये तेरा जीव है भूल गया था, अब यह गलती मानता है आप इसे बख्श दें।

हमारी आत्मा के ऊपर स्थूल पर्दा है जिसमें हम बैठे हैं, उसके अंदर सूक्ष्म है और उसके अंदर कारण है। जब हम अपनी आत्मा से ये तीनों पर्दे उतारकर तीसरे मंडल पर पहुँच जाते हैं और वहाँ जाकर जब हम दुनिया को देखते हैं जिस तरह पानी के अंदर बुलबुले नजर आते हैं इसी तरह यह संसार नजर आता है। वहाँ पता चलता है जिस तरह पानी और बुलबुले का रिश्ता है कि हवा पड़ी बुलबुला बन गया और हवा निकल गई पानी का पानी रह गया। वहां पता चलता है कि यह दुनिया खेल–तमाशा है। दसवें द्वार में पहुँचकर साध गति प्राप्त हो जाती है। वहाँ पहुँचकर पता चलता है कि **पूरे गुरु** क्या ताकत रखते हैं वे किस तरह इंसान के जामें में अपना आप छिपाकर रखते हैं।

किसी ने महाराज सावन सिंह जी के आगे जिक्र किया कि गरीब दास की लेखनियों में आता है कि दसवें द्वार में पहुँचकर साधु बनता है। जब तक दसवें द्वार में न पहुँचे उसे नामदान देने की क्रिया नहीं करनी चाहिए किसी को नामदान नहीं देना चाहिए क्योंकि जीवों के कर्म बहुत सख्त हैं, उठाने बहुत मुश्किल होते हैं।

महाराज सावन सिंह जी ने कहा कि मैं तो यह कहूँगा कि सचखंड पहुँचकर भी नाम नहीं देना चाहिए। जब तक गुरु आपकी जिम्मेदारी न उठाए। अगर गुरु आपसे कहते हैं कि तुमने मेरा मिशन चलाना है फिर भी हाथ जोड़ दें रो पड़ें, मिन्नत कर लें कि मैं यह काम नहीं कर सकता, आप महान हैं। अगर गुरु आपकी जिम्मेदारी ले लेते हैं कि तुम जिसे नाम दोगे, मैं उसकी संभाल करूंगा तभी आप उस काम को करें लेकिन स्थूल पर्दें में ही आप देखें कितना मुश्किल है कोई कहता है कि मेरा ध्यान नहीं टिकता, कोई कहता है कि मेरे गिट्टे दुखते हैं, मेरे शरीर को कंपकंपी लगी हुई है। प्यारेयो, अंदर के मंडल में जाना तो कितना ही मुश्किल हो जाता है।

मन की मदद मिली सूरत को। दोनों अपने महल समान।
बिना शब्द यह मन नहिं जागे। करो चाहे कोइ अनेक विधान।।

आप कहते हैं कि जो मन हमें दुनिया में फँसाता था, यह हमारा जाती दुश्मन है। मैं बताया करता हूँ कि जब हमारी आत्मा परमात्मा की तरफ थोड़ा सा भी झुकाव करती है तो हमारा जाती दुश्मन मन हमें अजीब–अजीब किस्म के अभ्यासों में फँसा देता है, जप–तप, पूजा–पाठ में लगा देता है तीर्थों–सरोवरों में स्नान करने में ही मुक्ति समझता है। असली नुक्ते को भुला देता है लेकिन जब मन जाग जाता है तो यह हमारी आत्मा की मदद करता है, ये दोनों अपने घर जाकर समा जाते हैं। मन ब्रह्म की अंश है, यह ब्रह्म में जाकर समा जाता है। आत्मा इसके पंजे से आजाद हो जाती है, आत्मा सतपुरुष की अंश है, सतपुरुष में जाकर समा जाती है।

जो ताकत कण–कण में व्यापक है, सबको सतह दे रही है उसे शब्द–नाम कहते हैं। सन्त–महात्मा किसी को भी अपनी देह के साथ नहीं जोड़ते, उसी ताकत 'शब्द' के साथ जोड़ते हैं। वे सच्चाई बताते हैं कि आपका असली गुरु 'शब्द–नाम' है क्योंकि देह तो सेवक की भी नहीं रहेगी और गुरु की भी नहीं रहेगी।

जब हमारे सतगुरु महाराज कृपाल इस संसार से यात्रा पूरी करके गए तो उस समय बहुत शोर–शराबा हुआ कि वे अब गुजर गए हैं, मर गए हैं अब हम जो मर्जी करें। उस समय संसार में एक ऐसी भी आत्मा उठी जिसने यह होका दिया कि उस आदमी को कोर्ट में खड़ा करें जो यह कहता है कि उसका गुरु मर गया है। क्यों भई, तूने मरने वाला गुरु क्यों धारण किया जिसका गुरु ही जन्म–मरण में लगा हुआ है वह सेवक को किस तरह तार सकता है? सन्तों में वह 'शब्द–नाम' काम करता है, वह ताकत जन्म–मरण में नहीं आती।

सिमरन के जरिए नौ द्वारे खाली करके आँखों के पीछे तीसरे तिल तक पहुँचना सेवक का धर्म है, यहाँ पहुँचकर देह से छुटकारा हो जाता है। आगे शब्द रूप गुरु आपके जाने से पहले ही आपकी इंतजार में खड़े होंगे। गुरु कहेंगे 'शब्द' पकड़कर अपने घर पहुँच। पहले हमारा अपनी देह से छुटकारा हो जाता है फिर हम सन्तों की देह से भी ऊपर उठ जाते हैं फिर हमें अपनी देह छोड़ने का शोक भी नहीं होता। फिर कोई फिक्र नहीं होता क्योंकि जिस ताकत के साथ हमें जोड़ा होता है वह हमारे अंदर हाजिर–नाजिर होती है। हमें पता है कि वह महान गुरु जिस तरह पहले हमें प्यार करते थे, अब भी कर रहे हैं, जिस तरह वह पहले देखभाल करते थे अब भी कर रहे हैं।

यही उपाव छाँट कर गाया। और उपाय न कर परमान।।
बिरथा बेस बितावें अपनी। लगे न कभी ठिकान।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि 'शब्द–नाम' की कमाई के बिना मन जागता नहीं। शब्द–नाम की कमाई के बिना मैं कोई प्रमाण देने के लिए भी तैयार नहीं क्योंकि सारे सन्तों ने अपनी जिंदगी में यह सब किया होता है। शब्द–नाम की कमाई के बिना हमारी जितनी उम्र बीत चुकी है, वह किसी लेखे में नहीं।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि लेखे में वही घड़ी है, जब हमें नाम मिल जाता है। हम शब्द–नाम की कमाई करने लग जाते हैं। गुरु नानकदेव जी भी अपना यही तजुर्बा बयान करते हैंः

किछु पुँन दान अनेक करणी नाम तुलि न समसरे।।
नानका जिन नामु मिलिआ करमु होआ धुरि कदे।।
नाम विसारि चलहि अन मारगि अंत कालि पछताही।।

नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतगुरु पासि।।
सतिगुर सेवै लगिआ कढि रतनु देवै परगासि।।

संत बिना सब भटके डोलें। बिना संत नहिं शब्द पिछान।।
शब्द शब्द मैं शब्दहि गाऊँ। तू भी सुरत लगा दे तान।।

आप कहते हैं कि जब तक सन्त सतगुरु नहीं मिलते तब तक हम भटकते फिरते हैं। कभी किसी जगह जाते हैं, कभी किसी जगह जाते हैं क्योंकि सन्तों के बिना शब्द की कोई पहचान नहीं कर सकता। प्यारेयो, हमारे अंदर काल ने भी ऐसी आवाजें रखी हुई हैं। हम आमतौर पर कह देते हैं कि वहाँ भी अनुभव हो गया, यहाँ भी अनुभव हो गया। प्यारेयो, काल ने अंदर जीवों को धोखा देने के लिए बहुत से छल रचे हुए हैं। अंदर जाकर भी हमें पता नहीं कि किस आवाज को पकड़ना है, किस आवाज को छोड़ना है, कौन सी आवाज ऊपर से आ रही है? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

अंतरि जोति सबदु धुनि जागै सतिगुरु झगरु निबेरै।।

जब तक अंदर **पूरे गुरु** नहीं होंगे, आपको क्या पता है कि काल से किस तरह बचना है, किस शब्द की आवाज को पकड़कर ऊपर जाना है। **पूरे गुरु** हर मंजिल पर साथ होंगे, हर मंजिल पर साँस–साँस के साथ आपकी रखवाली करेंगे, अगुवाई करेंगे।

घर पावे चौरासी छूटे। जन्म मरन की होवे हान।।
राधास्वामी कहें बुझाई। बिना संत सब भटके खान।।

स्वामी जी महाराज ने हमें बड़े प्यार से समझाया कि शब्द–नाम की कमाई क्यों करनी है? शब्द–नाम की कमाई के बिना हम देह के बंधनों से आजाद नहीं हो सकते।

बिन शब्द उपाय न दूजा काया का छूटे न गूजा

शब्द–नाम की कमाई करने से हमें अपने घर सचखंड जाने का रास्ता मिल जाता है, चौरासी का चक्कर खत्म हो जाता है। हम जन्म के समय दुख उठाते हैं, माँस के लोथड़े की तरह जन्म लेते हैं, अपने ऊपर से मक्खी नहीं उड़ा सकते, दूसरे की मदद के लिए झाँकते हैं और बोलकर भी नहीं बता सकते कि मेरी मदद करें। यही हालत मौत के वक्त होती है। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि तेरी जन्म–मरण की परेशानी सदा के लिए खत्म हो जाएगी, आत्मा शुरु में सचखंड से आई थी, वहाँ पहुँच जाएगी।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सच्चे सेवक

13 जनवरी 1991 मुम्बई

अपने दयालु गुरु की दया का वर्णन नहीं किया जा सकता यह उनकी ही दया है जो इस जीवन को उनके लेखे में लगाया। गुरु साहब कहते हैं:

राखहु राखनहार दइआला नानक घर के गोले।।

एक प्रेमी: *एक* ***सच्चे सेवक*** *के अंदर निर्दोषपन का क्या गुण होना चाहिए? किस तरह हम अपने आपको निर्दोष बना सकते हैं, किस तरह मासूमियत पैदा कर सकते हैं, उसकी क्या क़ीमत है?*

बाबा जी: हाँ भई, महाराज जी कहा करते थे कि परमार्थ में हम एक बच्चे की तरह ही होते हैं क्योंकि हमें पता नहीं किस तरह अंदर का सफ़र तय करना है, बच्चा निस्वार्थ प्यार करता है। एम.ए. पास को भी चालीस दिन के बच्चे जैसा बनना पड़ता है। सच्चाई तो यह है कि सच्चाई के साथ लगकर हम **सच्चे सेवक** बन सकते हैं।

जब तक हम नौ द्वारे ख़ाली करके आँखों के पीछे नहीं जाते, सूरज चंद्रमा सितारे पार करके गुरु स्वरूप को प्रकट नहीं कर लेते तब तक हमें पता नहीं कि हमारे मन ने हमारे अंदर कब दुनिया की कोई ख्वाहिश पैदा कर देनी है। दुनियावी या एक भी बुरा ख्याल इंसान को ब्रह्मांड की चोटी से नीचे गिरा सकता है। हम अंदर जाने की कोशिश तो करते हैं लेकिन हमें दुनिया के ख्याल बार-बार खींचकर बाहर ले आते हैं।

आमतौर पर हम अभ्यास कम करते हैं, थोड़ी देर बैठते हैं लेकिन दिन-रात गुरु के आगे ख्वाहिशें पूरी करवाने के लिए कहते हैं कि आप मेरी यह ख्वाहिश भी पूरी करें और वह ख्वाहिश भी पूरी करें। जब ख्वाहिशें पूरी नहीं होती तो हमारे अंदर अभाव आ जाता है, यह कोई सच्चा प्यार नहीं

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

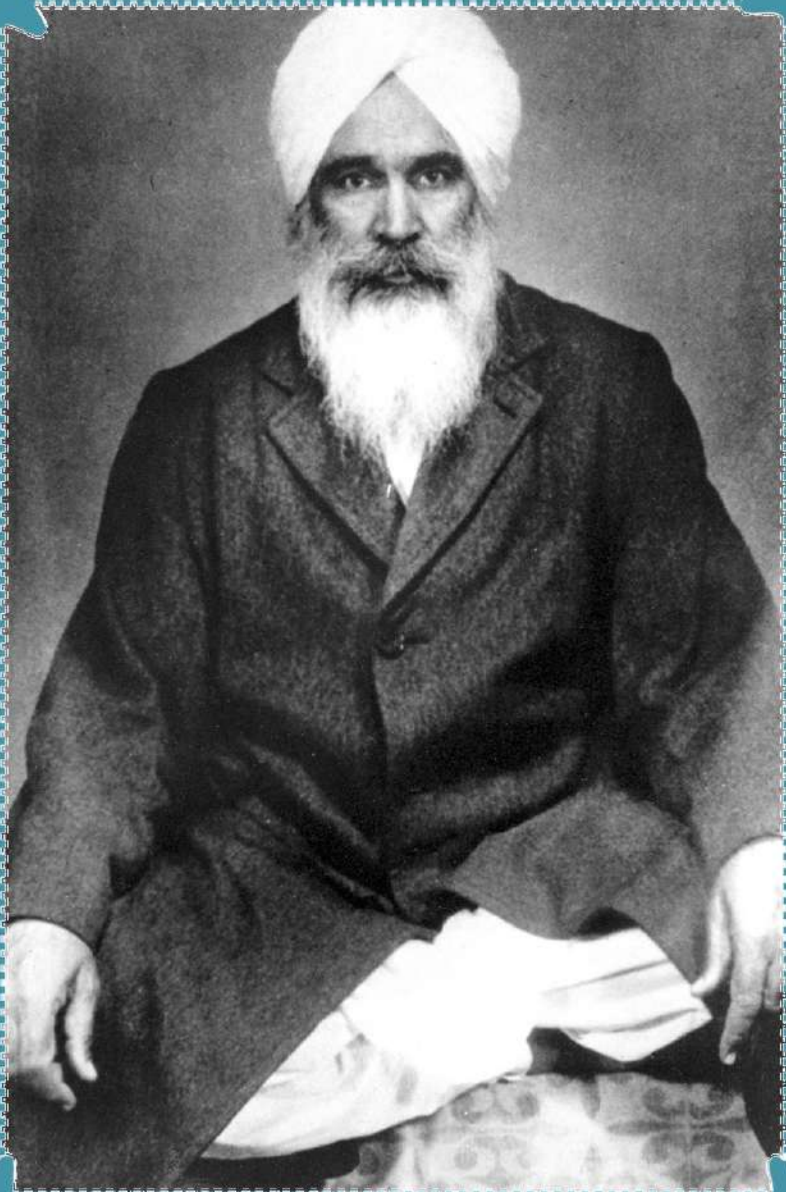

है, यह तो एक मज़दूरी माँगने वाली कहानी हो जाती है। गुरु नानक साहब ने कहा है कि नाम के बगैर जो कुछ भी माँगना है वह हम एक और दुख को बुलावा दे रहे होते हैं क्योंकि संतोष और शांति नाम में है।

इस बारे में मैं परम पिता कृपाल की बात बताया करता हूँ, वे किसी घर में गए, मैं उनके साथ था। उस आदमी के पैर में चोट लगी हुई थी, वह अपने आपको सच्चा–सुच्चा शिष्य होने का दावा करता था। उन्होंने चाय–पानी का इंतज़ाम किया हुआ था लेकिन सबसे पहले उसने यही ख्वाहिश रखी कि पहले आप मेरी चोट पर दृष्टि डालें, चाय बाद में पीना।

जब कोई अपने आप को सच्चा–सुच्चा सेवक कहता है, उसके दिल को बहुत चोट लगती है। मेरे गुरु प्यार के समुन्द्र थे, मैं प्यार का पुजारी था। मेरी माँग तो प्यार की ही थी, किसी दुनियावी चीज़, जायदाद या मान–बड़ाई की माँग नहीं थी। मैं बाहर जाकर भी यही कहा करता हूँ कि प्यारेयो, मुझे मेरे गुरुदेव से प्यार मिला है और मैं आपके साथ प्यार बाँटने ही आया हूँ। गुरु साहब कहते हैं:

घाटि न किन ही कहाइआ, सभ कहते है पाइआ।

कौन कहता है कि मैं गुरु का सेवक नहीं या किसी से कम हूँ? हर एक अपने आप का दावा ज़रूर करता है। मैं बताया करता हूँ कि श्रीकरणपुर का वाक्या था। वह मेरी ज़िंदगी का बहुत उत्तम वक्त था, मुझे महाराज कृपाल के साथ सफर करने का मौक़ा मिला। वहाँ पहुँचते ही उनका एक शिष्य कहने लगा कि मुझे जोत नहीं दिखी, मैंने कभी प्रकाश नहीं देखा। महाराज जी ने कहा कि तू डायरी रख, अभ्यास कर, सब ठीक हो जाएगा लेकिन उसने यही धुन पकड़ी हुई थी कि प्रकाश आना चाहिए।

आखिर महाराज जी ने उसे उसी जगह बैठा दिया लेकिन मेरे लिए यह बहुत अचरज बात थी कि जब भगवान आँखों के सामने हैं तो इसने प्रकाश से क्या लेना है? प्रकाश तो इसके अंदर थोड़ी–सी जगह पर ही

होगा, फिर भी इसे बढ़ाना पड़ेगा। जब बोलता महापुरुष, बोलता भगवान आँखों के सामने बैठा है तो यह और किसे देख रहा है? अंदर जाते हैं तो पता चलता है कि किस तरह हमारे दिल दिमाग़ पर गुरु का राज होता है। उस सेवक को पता है कि जो कुछ मुँह से बुलवाते हैं वे गुरु ही बुलवाते हैं।

जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै।

उस वक्त मैं उनकी दया से यही लफ्ज कह सका, ''न मैंने सतनाम देखा है न ही मैं सतनाम देखना चाहता हूँ। न मैंने कोई भगवान देखा है, न कोई वाहेगुरु देखा है, न कोई अल्लाह देखा है, न मैं उन्हें मानता हूँ। मुझे तो आप दिखे हैं, मैं तो आपको ही मानता हूँ। आप ही मेरे राम हैं, आप ही मेरे रहीम हैं, आप ही मेरे गिरधारी हैं जो गिरे हुए को उठाने वाले हैं और आप ही मुरारी हैं जो मुर्दे में जान डालने वाले हैं।'' यह अपना-अपना ख्याल है, यह मेरा ही ख्याल नहीं, स्वामी जी महाराज भी कहते हैं:

सतनाम जानूं न अनामी।

हे सतगुरु, मैं आपके बिना सतनाम और अनामी को नहीं जानता, मेरे लिए आप ही सब कुछ हैं। बुल्लेशाह से उनके परिवार ने पूछा कि क्या तू गुरु का सच्चा सेवक है? तू गुरु को क्या समझता है, गुरु क्या हैं? तो बुल्लेशाह ने कहा, ''अगर हम उन्हें बाहर से देखें तो गले में कपड़े ही डाले हुए हैं, हाड़-माँस ही है अगर अंदर जाकर उन्हें देखें तो बहिश्तों में भी थूकने का मन नहीं करता।

बुल्लेशाह के गुरु अराईं जाति के थे, अराईं जाति मुसलमानों में बहुत छोटी मानी जाती है। बुल्लेशाह ऊँची जाति सैय्यद के थे इस जाति को आम मुसलमान लोग मानते हैं, यह बहुत माननिक क़ौम होती है। सैय्यद लोगों ने बुल्लेशाह की विरोधता की। बुल्लेशाह ने लोगों में यही कहा कि जो मुझे सैय्यद बुलाएगा, उसे दोज़क में सजा मिलेगी और जो मुझे अराईं कहेगा, उसे बहिश्तों में जगह मिलेगी।

बाहर हम सच्चे और अच्छे बनने की प्रैक्टिस कर रहे हैं, उस प्यार को जगाने की प्रैक्टिस कर रहे हैं लेकिन जब गुरु स्वरूप को प्रकट कर लेते हैं तभी **सच्चे सेवक** बनते हैं और तभी हमारे अंदर गुरु के लिए सच्चा–सुच्चा प्यार और सच्ची श्रद्धा जागती है।

अगर हम बाहर अच्छे बनने की प्रैक्टिस न करें तो हम अच्छे बन ही नहीं सकते, अंदर जा ही नहीं सकते अगर हम बाहर बातें करके छोड़ दें, कमाई न करें, सिमरन न करें तो हम बाहर के बाहर ही रह जाते हैं। ऐसा नहीं की सच्चाई का बीज नाश होता है, सच्चाई है। संगत में ऐसे बहुत प्रेमी हैं जो बहुत सच्चे–सुच्चे हैं, प्यारे हैं जिन्होंने गुरु स्वरूप को अंदर प्रकट किया है, गुरु से बातें करते हैं।

आमतौर पर जब ऐसे प्रेमी इंटरव्यू में आते हैं तो उनके कोई सवाल नहीं होते, वे बिल्कुल शांत होते हैं, वे सिर्फ़ दर्शनों के लिए ही आते हैं। ज्यादातर जिन प्रेमियों के साथ मिलने–जुलने का मौक़ा मिलता है, उसमें औरतें–आदमी दोनों होते हैं वे यह कहते हैं कि शादी नहीं हो रही, हमारे लिए अच्छा पति ढूँढ दें, अच्छी पत्नी ढूँढ दें। कई बीमार आते हैं जो यह कहते हैं कि हमारी बीमारी दूर हो जाए। कई लोग कहते हैं कि हमें कारोबार में नुक़सान हो गया है, अब आप उसे ठीक करें। कोई अपने परिवार के लिए सुख–शांति माँगता हैं। कबीर साहब कहते हैं:

सच्चे का कोई ग्राहक नाहीं, झूठे जगत पतीजे जी।
कहत कबीर सुनो भई साधो, अंधे को क्या कीजे जी।।

गुरु सबको चाहता है लेकिन गुरु को कोई विरला ही चाहता है। कोई कहता है कि मेरे ऊपर मुसीबत है, वह दूर करें। कोई दुनिया की मान–बड़ाई या धन–दौलत की ख़ातिर आता है कि महाराज जी कृपा करें। सन्त हमें नाम देकर सचखंड पहुँचाने के लिए आते हैं लेकिन उस सच्ची चीज़ के बहुत कम ग्राहक होते हैं।

मैं आपको गुरु अर्जुन देव जी के वक्त की एक कहानी सुनाऊँगा, उन्होंने सचखण्ड पहुँचकर भी अपने आपको सच्चा सिख तो क्या कहना था, आधा सिख ही कहा है। उनके दरबार में राय बलवंड और सत्ताडूम कीर्तन किया करते थे, वे अच्छे प्रेमी थे। उनके घर में शादी थी, वे जब मन के संपर्क में आए तो उनके दिल में ख़्याल आया कि हम गुरु दरबार के रागी हैं हम बहुत धूमधाम से शादी करेंगे। कोई यह न कह सके कि गुरु के रागी होकर भी इन्होंने शादी में अच्छा खर्चा नहीं किया।

हिन्दुस्तान में यह रिवाज है कि लोग शादी की शानो–शौक़त पर बहुत ज़्यादा ख़र्च करते हैं बेशक उन्हें पैसे उधार क्यों न उठाने पड़ें, घर भी क्यों न गिरवी रखना पड़े। ज़िंदगी में एक लड़की की भी शादी करनी पड़ जाए तो घरवालों के लिए बहुत मुश्किल हो जाती है। इसी तरह की हालत उनके दिमाग़ की भी थी कि हम सबसे अच्छी शादी करें।

उनके दिल में ख्याल आया कि महाराज के पास बहुत सेवक आते हैं, इन्हें वे सेवक बहुत पैसे देते होंगे। आमतौर पर हम ऐसे ही ख्याल करते हैं लेकिन यह गुरु ही जानते हैं कि उनके लंगर बहुत मुश्किल से चल रहे होते हैं। उन दोनों ने महाराज के आगे जाकर विनती की कि हमने लड़की की शादी करनी है, आप हमें हर सिख से एक टका चंदा इकट्ठा करवाकर दें।

गुरु अर्जुनदेव जी ने कहा कि आपको जितने पैसों की ज़रूरत है बताएं, आपको गुरु घर से दिलवा देंगे। उन्होंने सोचा कि अगर गुरु साहब पैसे देंगे तो कहीं कम न दें, अगर टका सिख चंदा इकट्ठा करवाकर दें तो बहुत सारी संगत है, बहुत सारे पैसे बन जाएंगे। इसलिए उन दोनों ने कहा, ''नहीं जी।'' तब गुरु अर्जुनदेव जी ने कहा, ''अच्छा भई।''

गुरु अर्जुनदेव जी ने उन्हें साढ़े चार टके लाकर दे दिए और कहा, ''देखो भई, एक टका गुरु नानकदेव जी का जो सच्चे सिख हुए हैं। दूसरा टका गुरु अंगददेव जी का जो सच्चे सिख हुए हैं। तीसरा टका गुरु

अमरदास जी का और चौथा टका गुरु रामदास जी का और ये आधा टका मेरा है क्योंकि मैं अभी आधा ही सिख हूँ।''

आप सोचकर देखें कि वे सचखंड के मालिक परमात्मा रूप थे और गुरु ने उन्हें अपनी जगह संगत की अगुवाही करने के लिए मुक़र्रर किया था फिर भी जब तक देह में बैठे रहे, उन्होंने यही कहा कि मैं अभी पूरा सिख नहीं हूँ, मैं आधा ही सिख हूँ। वे रागी बहुत नाराज़ होकर चले गए कि हमें न देने लिए यह सिर्फ एक बहाना है। चाहे हम सन्तों के पास रहें लेकिन उन्हें समझना बहुत ही मुश्किल है।

सच्चे सेवक गुरु अंगद देव थे, उनका नाम भाई लेहणा था लेकिन गुरु नानक देव जी ने उन्हें इतना नजदीक किया कि अपने अंग से लगाकर अंगद बना दिया कि ये मेरे अंग से ही पैदा हुआ है। एक बार अंगद देव जी गुरु नानक देव जी के साथ खेत में जा रहे थे, उनकी बाजू गुरु नानक देव जी से थोड़ी सी आगे निकल गई, उन्होंने साल भर उस बाजू को बांधकर रखा कि तू गुरु से आगे निकलती है। सच्चे सेवक दावा नहीं करते, दिखावा नहीं करते। ये कहने की नहीं, करने की बातें होती हैं।

मैं अपना वाक्या बताया करता हूँ, जब परम पिता कृपाल जी कुछ आदमियों को नाम दिलवाने लगे तो उन्होंने मुझसे कहा कि इन्हें थोड़ी-बहुत थ्योरी समझा दें। मैंने आँखों से प्यार भरे आंसू निकाले और विनती की कि महाराज जी, ये जितने आदमी बैठे हैं, आप इन पर दया कर दें जो मुझ पर की है। आप जो मुझे दिख रहे हैं, इन पर भी वही रहमत कर दें। महाराज जी काफी नाराज़ होकर बोले, ''तू लोगों से मेरे कपड़े न फड़वा, मैं जो कहता हूँ वह कर।''

आपको पता है कि **सच्चा सेवक** कभी गुरु की बराबरी नहीं कर सकता। वह गुरु को कुल-मालिक समझ कर चलता है कि आप सब पर रहमत करने वाले हैं, आप ही रहमत करें।

गुरु गोबिंद सिंह जी से यही सवाल किया गया कि सिख या **सच्चा सेवक** कौन है? उन्होंने कहा, ''देखो प्यारेयो, जिसके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के झोंके उठने बंद हो जाएं, ख्याल दब जाएं, सिर्फ़ शब्द का ही राज हो जाए, जो अंदर शब्द और गुरु स्वरूप को प्रकट कर ले, वही सिख है। अगर वह बुराइयों और इन मैलों से ऊपर नहीं उठता तो वह मन का सिख है, गुरु का सिख नहीं है।'' एक प्रेमी ने उठकर कहा, ''महाराज जी, मैं न परिवार का सिख हूँ, न औरत का सिख हूँ, न मैं किसी और का सिख हूँ, मैं आपका सिख हूँ।'' गुरु साहब चुप रहे।

कई दिनों बाद गुरु गोबिंद सिंह जी ने उस सिख को अपने पास बुलाया और कहा, ''देख भई, एक ऐसा कपड़े का थान लेकर आ कि उस जैसा बाज़ार में न मिले।'' वह बाजार से जाकर एक बहुत अच्छा कपड़े का थान ले आया। वह जब घर आया तो घर पर उसकी औरत ने कहा कि यह थान तो बहुत अच्छा है, इसे तो मैं रखूँगी। उसने अपनी औरत को बहुत समझाया कि यह थान मैंने गुरु साहब के लिए लेकर जाना है, मैंने बाज़ार से बहुत मुश्किल से ढूँढा है। औरत ने कहा, ''गुरु साहब कौन–सा देख रहे हैं, उन्हें कौन–सा पता है? तू कह देना कि मैंने कोशिश की थी मुझे ऐसा कोई थान नहीं मिला, मैं अभी कोशिश कर रहा हूँ।''

अगले दिन जब वह गुरु साहब की संगत में जाने लगा तो उसकी औरत भी पीछे–पीछे चल पड़ी और उसने थान को एक कपड़े में छिपा लिया। गुरु साहब ने उससे पूछा, ''क्यों भई सिखा, तुझे जो कपड़ा लाने के लिए कहा था क्या वह ले आया है?'' उसने कहा, ''नहीं जी, मैंने बहुत कोशिश की लेकिन वैसा थान नहीं मिला, मैं आज फिर कोशिश करूँगा।'' पीछे से औरत ने कपड़े का थान निकाल कर कहा, ''देखो जी, यह आपका सिख नहीं मेरा सिख है, यह मेरा हुक्म मानता है।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा कि गुरु का सिख कोई–कोई है।

कोई टीचर नहीं चाहता कि मेरी क्लास के बच्चे अच्छे न बनें या फेल हो जाएं। सब टीचर चाहते हैं कि सारे बच्चे पास हो जाएं। लोग हमें भी कहें कि इस टीचर के पढ़ाए हुए बच्चे बहुत काबिल हैं। कोई माता–पिता नहीं चाहते कि हमारे बच्चे नशे में लगें, जुआ खेलें या शराबी–कबाबी बनें। जो माता–पिता की ड्यूटी समझते हैं, वे हमेशा ही अपने बच्चों को अच्छी सोहबत और अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने के लिए प्रेरित करते हैं।

जितने भी सन्त सचखण्ड से आते हैं, वे हमेशा अपने नामलेवा की बेहतरी सोचते हैं। सतसंग में बैठकर हमेशा नेक राय देते हैं कि आप पवित्र बनें, अपने ख़्यालों को भी पवित्र बनाएं क्योंकि जितने शिष्य अच्छे होंगे और नाम की कमाई करेंगे, उतनी ही उनमें से नाम की ख़ुशबू बाहर जाएगी, उतना ही गुरु का यश दुनिया में ज़्यादा फैलेगा कि ये फलाने सन्त के सेवक हैं, ये बहुत ही अच्छे हैं।

मैं महाराज सावन सिंह जी के वक्त का एक वाक्या बताया करता हूँ कि हिन्दुस्तान में लोग यह मानते थे कि उनके शिष्य झूठ नहीं बोलते। इसी तरह गुरु गोबिंद सिंह जी के जाने के बाद भी यह धारणा संसार में बनी रही कि उनके शिष्य झूठ नहीं बोलते, चोरी नहीं करते। लेकिन जब हम नाम का रास्ता छोड़ जाते हैं, नाम की कमाई से मुँह मोड़ लेते हैं, उस वक्त हमारे अंदर मन का राज हो जाता है। हम इंद्रियों के काबू आ जाते हैं। इन्द्रियां जो नाच नचाती हैं, हमें नाचना पड़ता है। हम खुद तो बदनाम होते ही हैं, गुरु को भी बदनाम कर देते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

माड़ा कुत्ता, खस्मे गाली।

हमें सन्तों की ज़िंदगी से पता चलता है, मैंने महाराज सावन सिंह जी के बारे में काफी कुछ देखा है। उन्होंने कभी अपनी सेहत की परवाह नहीं की थी। जिस तरह एक फ़ौजी आदमी परेड में जाता है, ड्यूटी करता है, उसी तरह बेशक वे कितने ही बीमार क्यों न हों, वे हमेशा सतसंग में आते

रहे, उन्हें यही था कि मेरे सेवक बेहतर बनें। इसी तरह परम पिता कृपाल बीमारी की परवाह नहीं करते थे, उन्होंने अपनी ज़िंदगी बहुत बे–आरामी में काटी लेकिन हमें बेहतर बनाने के लिए उन्होंने दिन–रात एक किया हुआ था कि किसी न किसी तरह ये मेरे किसी लफ्ज को समझें, बेहतर बनें, मन–इंद्रियों की गुलामी से पीछा छुड़वा लें और जीते–जी कामयाब हो जाएं। मैं जो तालीम देता हूँ, उसे समझ जाएं। पलटू साहब कहते हैं:

उनको क्या है चाह सहत है दुख घनेरा।
जिव तारन के हेतु मुलुक फिरते बहुतेरा।।

मेरा जीवन सतसंगियों के सामने खुली किताब की तरह है। मैं किसी भी देश में गया, मैं कभी समुन्द्र की सैर करने या कभी कोई शहर देखने नहीं गया। मैं हवाई जहाज़ में बंद होकर जाता हूँ, वहाँ जाकर संगत की सेवा में लग जाता हूँ और जितनी देर मालिक का हुक्म होता है, सेवा करके उसी तरह ही वापिस आ जाता हूँ। दिल्ली जाता हूँ, वहाँ भी पप्पू को पता ही है कि कार से उतरकर अंदर बैठ जाता हूँ, सतसंग या अभ्यास के लिए बाहर जाता हूँ, मेरा शहर से कोई मतलब नहीं है।

मेरी यही हालत मुम्बई में है, मैं जहां भी जाता हूँ सिर्फ़ संगत की सेवा के लिए ही जाता हूँ। यह भी मैं अपने गुरु का धन्यवाद करता हूँ कि जिन्होंने यह मौक़ा दिया है। प्यारेयो, मैं भी आपको उनका दिया हुआ संदेश ताज़ा करवा रहा हूँ, आपको सुना रहा हूँ कि अच्छे और सच्चे बनें।

कबीर साहब ने कहा था कि पाँच विषयों का साथ लेकर सारी उम्र निकल गई है, अगर अभी तक हमारा मन नहीं भरा तो बाद में कौन–सा भर जाएगा। भाई गुरदास ने कहा था कि आँखें दुनिया के रंग तमाशों को देख–देखकर नहीं भरती, नाक ख़ुशबू ले–लेकर नहीं भरता, इंद्रियाँ भोग–विलास का स्वाद लेकर नहीं भरती। नाम से जुड़कर ही तृप्ति और शांति है। नाम सदा से सच्चा है, उसके साथ जुड़कर हम भी सच्चे बन जाते हैं।

सवाल बहुत अच्छा था, इसके मुत्तलिक चाहे सारी ज़िंदगी बताते रहें, ये कहानियाँ ख़त्म नहीं होंगी। सबसे बेहतर यही है कि हम नौ द्वारों से ख़्याल निकालकर आँखों के पीछे आएं, जहां वे दाता दान कर रहे हैं, प्यार दे रहे हैं, सच्चे बना रहे हैं। ***

धन्य अजायब

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में सतसंग के कार्यक्रम:

1. 31 अक्टूबर, 01 व 02 नवम्बर
2. 05, 06 व 07 दिसम्बर

RNI No - RAJHIN/2003/9899

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज